अध्याय 23

अय्यूब का उत्तर (भाग 1)

अध्याय 23 के सम्बन्ध में, सेमुएल कॉक्स ने लिखा है:

> [यह] सर्वोच्च न्यायी की निष्पक्षता में उत्तम और पक्के भरोसे से प्रेरित है। ... परमेश्वर निष्पक्ष है; अय्यूब खरा है: पर खरा मनुष्य उस ईश्वरीय न्यायी के सिंहासन तक कैसे पहुंचे जो उसके साथ है, पर फिर भी नहीं है; बिल्कुल है पर दिखाई नहीं देता; उसे महसूस किया जा सकता है पर, पहचाना नहीं जा सकता। यही वह प्रश्न है जो अब अय्यूब को परेशान करता है।[1]

''काश मैं अपना मुकदमा परमेश्वर के सामने पेश कर पाता'' (23:1-7)

[1]तब अय्यूब ने कहा, [2]''मेरी कुड़कुड़ाहट अब भी नहीं रुक सकती, मेरी मार मेरे कराहने से भारी है। [3]भला होता, कि मैं जानता कि वह कहाँ मिल सकता है, तब मैं उसके विराजने के स्थान तक जा सकता! [4]मैं उसके सामने अपना मुक़द्दमा पेश करता, और बहुत से प्रमाण देता। [5]मैं जान लेता कि उसने मुझ से उत्तर में क्या कहा है, और जो कुछ वह मुझ से कहता वह मैं समझ लेता। [6]क्या वह अपना बड़ा बल दिखाकर मुझ से मुक़द्दमा लड़ता? नहीं, वह मुझ पर ध्यान देता। [7]सज्जन उससे विवाद कर सकते, और इस रीति मैं अपने न्यायी के हाथ से सदा के लिये छूट जाता।''

आयतें 1, 2. अय्यूब का मानना था कि उसकी पीड़ा का कारण परमेश्वर ही है। इसका सर्वनामों से स्पष्ट संकेत है कि अय्यूब उसी की ही बात कर रहा था। निश्चय ही उसकी **कुड़कुड़ाहट** को उसके मित्रों ने **नहीं रुक**ना (*me·ri, मेरी*) समझ लिया।[2] अय्यूब की पुस्तक में यह इब्रानी शब्द केवल यहीं पर मिलता है। ''नहीं रुकना'' के लिए अधिक सामान्य शब्द *pesha‘* (*पेशा*) है।

आयत 3. अय्यूब को परमेश्वर, परमेश्वर को **मिल**ने की अर्थात **उसके विराजने के स्थान** तक जाने की तड़प थी। ''विराजने के स्थान'' (*the·kunah, थेकुना*) शब्द मूलतया ''एक पक्की जगह'' है। इसका ''अर्थ इस संदर्भ में 'सिंहासन' के रूप में लिया गया है। यह शब्द उस नींव की बात करता है जिससे इमारत स्थिर होती है; जिस कारण सिंहासन को सम्राट के शासन की नींव के रूप में देखा जा सकता है।''[3] अय्यूब को और सब बातों से बढ़कर यह इच्छा थी कि परमेश्वर उसका श्रोता हो।

आयत 4. कानूनी अदालत की न्यायिक भाषा का इस्तेमाल करते हुए अय्यूब ने अपना **मुकद्दमा** केवल उसी के सामने पेश करना चाहा जो उसे निर्दोष ठहरा सकता था। उसने पहले कहा था, ''चित्त लगाकर मेरी बात सुनो, और मेरी विनती तुम्हारे कान में पड़े। देखो, मैं ने अपने मुक़द्दमे की पूरी तैयारी की है; मुझे निश्चय है कि मैं निर्दोष ठहरूँगा'' (13:17, 18)। अय्यूब को परमेश्वर द्वारा उसे निर्दोष ठहराए जाने पर भरोसा था।

अय्यूब के **प्रमाण** के सम्बन्ध में रॉबर्ट एल. आल्डन ने लिखा, ''बेशक उसने उसे निर्दोष घोषित कर देना था; उसने अधर्मी लोगों के जिन्हें कोई दु:ख नहीं था, एक एक उदाहरण देने थे; उसने उन बर्बादियों का जो उसके ऊपर पड़ी थीं, जवाब मांगना था।''[4]

आयत 5. अय्यूब ने इस तथ्य को कहा कि यदि परमेश्वर बात करे तो वह सुनकर समझ प्राप्त करेगा।

आयत 6. ''क्या वह अपना बड़ा बल दिखाकर मुझ से मुक़द्दमा लड़ता? नहीं, वह मुझ पर ध्यान देता।'' अय्यूब ने भरोसा जताया कि परमेश्वर ने उसके साथ कठोर नहीं होना था बल्कि उसके साथ सहानुभूति दिखानी थी। इस संदर्भ में ''मुकद्दमा लड़ता'' (*rib, रिब*) शब्द का अर्थ ''बहस करना, मुकद्दमा चलाना'' है।[5] इसके अलावा जॉन ई. हार्टले ने लिखा है कि मिशना के इब्रानी में ''बल'' (*koach, क़ोच*) शब्द का अर्थ ''कानूनी शक्ति'' है और यहां पर इसका यही अर्थ हो सकता है।[6] ''ध्यान देता'' (*śim, सिम*) को ''की परवाह करता'' के रूप में भी समझा जा सकता है।[7]

आयत 7. ''सज्जन उससे विवाद कर सकते, और इस रीति मैं अपने न्यायी के हाथ से सदा के लिये छूट जाता।'' कितना बढ़िया भरोसा है, अय्यूब के न्यायी ने उसे निर्दोष ठहराने वाला भी होना था! ''छूट जाता'' का अनुवाद ''दोष-मुक्त ठहरता'' भी हो सकता है (RSV; NRSV; NLT)। दोष-मुक्त होना या छूट जाना परमेश्वर ''के साथ विवाद'' करने के अय्यूब के अवसर का परिणाम है।

''परमेश्वर मुझे जानता है, पर मैं उसे देख नहीं सकता'' (23:8-17)

[8]''देखो, मैं आगे जाता हूँ परन्तु वह नहीं मिलता; मैं पीछे हटता हूँ, परन्तु वह दिखाई नहीं पड़ता; [9]जब वह बाईं ओर काम करता है, तब वह मुझे दिखाई नहीं देता; वह दाहिनी ओर ऐसा छिप जाता है, कि मुझे वह दिखाई ही नहीं पड़ता। [10]परन्तु वह जानता है कि मैं कैसी चाल चला हूँ; और जब वह मुझे ता लेगा तब मैं सोने के समान निकलूँगा। [11]मेरे पैर उसके मार्गों में स्थिर रहे; और मैं उसी का मार्ग बिना मुड़े थामे रहा। [12]उसकी आज्ञा का पालन करने से मैं न हटा, और मैं ने उसके वचन अपनी इच्छा से कहीं अधिक काम के जानकर सुरक्षित रखे। [13]परन्तु वह एक ही बात पर अड़ा रहता है, और कौन उसको उससे फिरा सकता है? जो कुछ उसका जी चाहता है वही वह करता है। [14]जो कुछ मेरे लिये उसने ठान लिया है, उसी को वह पूरा करता है; और उसके मन में ऐसी ऐसी बहुत सी बातें हैं। [15]इस कारण मैं उसके सम्मुख घबरा जाता हूँ; जब मैं सोचता हूँ तब उससे थरथरा उठता हूँ। [16]क्योंकि मेरा मन परमेश्वर ही ने कच्चा कर दिया, और सर्वशक्तिमान ही ने मुझ को

घबरा दिया है; [17]क्योंकि मैं अंधकार से घिरा हुआ हूँ, और घोर अंधकार ने मेरे मुँह को ढाँप लिया है।''

आयतें 8, 9. अय्यूब ने परमेश्वर को और अपने दु:खों के उत्तर **आगे**, **पीछे**, **बाईं ओर**, और **दाहिनी ओर** जिधर भी हों हर तरफ ढूंढ़ा। कुछ संस्करणों में ''पूर्व,'' ''पश्चिम,'' ''उत्तर'' और ''दक्षिण'' है (TEV; NIV; NJB; NJPSV; NLT)। इन दिशाओं ने अय्यूब को मैसोपोटामिया, भूमध्य सागर, सीरिया और अरब की ओर ले जाना था। आल्डन ने बताया, ''चाहे अय्यूब के कहीं जाने का कोई रिकॉर्ड नहीं है पर उसने परमेश्वर को ढूंढ़ने की अत्यंत असम्भावना के वर्णन के लिए उपमाओं का इस्तेमाल किया।''[8]

आयत 10. ''परन्तु वह जानता है कि मैं कैसी चाल चला हूँ; और जब वह मुझे ता लेगा तब मैं सोने के समान निकलूँगा।'' अय्यूब के परमेश्वर को ''मिल'' पाने की अयोग्यता के विपरीत, उसे यह भरोसा था कि परमेश्वर उसे अच्छी तरह से जानता है। आल्डन ने कहा, ''यहां विश्वास की तीन ध्यान देने योग्य बातें हैं: (1) अय्यूब का विश्वास था कि परमेश्वर उसकी परिस्थिति को जानता है; (2) अय्यूब का विश्वास था कि परमेश्वर उसे परख रहा है; (3) अय्यूब का विश्वास था कि वह एक बेहतर मनुष्य बनकर निकलेगा।''[9] अय्यूब का विश्वास उन परीक्षाओं के द्वारा जिन्हें वह सह रहा था चमकाया जा रहा था, बिल्कुल वैसे जैसे ''सोने'' को आग से तपाया जाता है (देखें 1 पतरस 1:6, 7; प्रकाशितवाक्य 3:18)।

आयतें 11, 12. ''मेरे पैर उसके मार्गों में स्थिर रहे; और मैं उसी का मार्ग बिना मुड़े थामे रहा। उसकी आज्ञा का पालन करने से मैं न हटा, और मैं ने उसके वचन अपनी इच्छा से कहीं अधिक काम के जानकर सुरक्षित रखे।'' अपनी खराई में भरोसे की यह कितनी बड़ी बात है। एच. एच. रोअले ने लिखा है, ''अय्यूब की अटल खराई के लिए ईश्वरीय साक्षी (2.3) को परमेश्वर की व्यवस्था के प्रति उसकी ज़बर्दस्त वफ़ादारी के साथ मिलाया जाता है।''[10]

बुद्धि के साहित्य में किसी के जीने के ढंग को आम तौर पर ''चाल-चलन'' या ''चाल'' ''गति'' से मिलाया जाता है (4:6; 13:15; 22:3; 31:4; भजन संहिता 1:1, 6; 119:105; नीतिवचन 2:20; 3:6)। बुद्धिमान हमें अच्छे चाल-चलन से न ''फिरने'' की चेतावनी देता है:

> तेरी आंखें सामने ही की ओर लगी रहें, और तेरी पलकें आगे की ओर खुली रहें। अपने पांव धरने के लिये मार्ग को समथर कर, और तेरे सब मार्ग ठीक रहें। न तो दाहिनी ओर मुड़ना, और न बाईं ओर; अपने पांव को बुराई के मार्ग पर चलने से हटा ले (नीतिवचन 4:25-27)।

अय्यूब ने ''[परमेश्वर] के मुख के वचन'' को ''अपनी इच्छा अर्थात अपनी प्रतिदिन की रोटी'' से कहीं ऊपर रखा था (NIV; NJPSV)।[11] वह इस बात को समझता था कि '''मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एकवचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा''' (मत्ती 4:4; व्यवस्थाविवरण 8:3 से उद्धृत करते हुए)।

आयतें 13, 14. अय्यूब को चाहे अपनी खराई पर पूरा भरोसा था पर वह परमेश्वर की प्रभुता के सामने दीन भी था, जिसकी **बातें** अटल हैं। **परन्तु वह एक बात** (*w^{e}hu' b^{e}'echad*,

वेहू बेचद) का अनुवाद ''परन्तु वह एक में है'' या ''परन्तु वह एकता में है'' भी हो सकता था। यह इस्राएल के विश्वास के सबसे बड़े अंगीकार के जैसा है: ''हे इस्राएल, सुन, यहोवा हमारा परमेश्वर है, यहोवा एक ही है; तू अपने परमेश्वर यहोवा से अपने सारे मन, और सारे जीव, और सारी शक्ति के साथ प्रेम रखना'' (व्यवस्थाविवरण 6:4, 5)। अय्यूब की बात में इस तथ्य को दर्शाया गया है कि वह एकेश्वरवाद में विश्वास रखता था यानी यह कि कोई दूसरा परमेश्वर नहीं है।

आयत 15. जैसे-जैसे अय्यूब परमेश्वर के साथ मुलाकात पर विचार करने लगा वैसे-वैसे वह और **घबरा जाता** था। जब अंत में आंधी में से परमेश्वर ने अय्यूब के साथ बात की (38:1), तो अय्यूब केवल अपनी तुच्छता को मानकर अपना हाथ अपने मुंह पर ही रख पाया (40:4)।

आयत 16. अय्यूब ने **परमेश्वर** को अच्छे हों या बुरे जीवन के सब मुद्दे देने वाले के रूप में देखा। होमेर हेली ने लिखा है, ''अय्यूब के मन के उदास होने या कमज़ोर होने के केवल दो ही कारण सुझाए जा सकते हैं: 1) अय्यूब को दोषी माना गया, एक बड़ा पापी, जबकि उसे पता था कि वह निर्दोष है और 2) परमेश्वर का क्रोध अय्यूब के दु:ख उठाने में बड़े ज़ोरदार ढंग से दिखाया गया था।''[12]

आयत 17. ''क्योंकि मैं अंधकार से घिरा हुआ हूँ, और घोर अंधकार ने मेरे मुँह को ढाँप लिया है।'' इस आयत का अनुवाद और अर्थ करना कठिन है। यदि NASB का अनुवाद सही है तो इसका अर्थ यह हो सकता है कि अय्यूब को परमेश्वर के भय के बावजूद उत्तर पाने की अपनी बात को जारी रखने को विवश लगा। परन्तु क्रिया शब्द ''घिरा हुआ'' (*tsamath, सामथ*) का अर्थ आम तौर पर ''नष्ट करना'' होता है।[13] KJV में है ''परन्तु मैं अंधकार से पहले काटा नहीं गया।'' अन्य शब्दों में अय्यूब के मन में परमेश्वर का भय बना रहा, क्योंकि मृत्यु ने उसे उठाया नहीं था (देखें 3:4, 5, 11-13; 10:18-22)।

प्रासंगिकता

परमेश्वर के सिंहासन के पास आना (23:1-7)

अय्यूब अपना मुकद्दमा परमेश्वर के सामने लेकर जाना चाहता था। उसका मानना था कि वह अपने मुकद्दमे पर सफलतापूर्वक बहस कर सकता है और उसे अपने दु:खों से छुटकारा मिल जाएगा। आखिर परमेश्वर धर्मी और पवित्र परमेश्वर है और अय्यूब पर किसी गम्भीर बात का आरोप नहीं है। अय्यूब का मानना था कि यदि वह अपनी बात परमेश्वर के सामने कह सके तो वह उसे दोष-मुक्त करके उसकी परिस्थितियों को पलट देगा। इस वचन से हमें परमेश्वर के निकट आने के सम्बन्ध में कई सबक सीखने को मिलते हैं।

परमेश्वर के सामने आने की इच्छा करो। आयत 3 में अय्यूब ने कहा, ''भला होता, कि मैं जानता कि वह कहाँ मिल सकता है, तब मैं उसके विराजने के स्थान तक जा सकता!'' अय्यूब परमेश्वर के सिंहासन तक पहुंचकर उससे बात करना चाहता था। यह अच्छी बात है कि अय्यूब अच्छे और बुरे समयों के दौरान परमेश्वर का आराधक रहा। कहानी के आरम्भ में हम उसे अपने अच्छे समयों में परमेश्वर के सामने भेंटें लाते हुए देखते हैं (1:5)। यहां पर, जब समय खराब

चल रहा था तब भी उसने परमेश्वर को ढूंढा। कुछ लोग परमेश्वर के बारे में सोचने या उसे पुकारने से पहले किसी संकट के आने की राह देखते हैं। परन्तु मसीही लोगों को उसके साथ निकट सम्बन्ध की इच्छा सदैव रखनी चाहिए, समय चाहे अच्छा हो या बुरा।

हमारे पास एक सिद्ध मध्यस्थ है जिसके द्वारा हमारी पहुंच परमेश्वर के सिंहासन तक है। पहला तीमुथियुस 2:5 कहता है, ''क्योंकि परमेश्वर एक ही है और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात मसीह यीशु जो मनुष्य है।'' पहला यूहन्ना 2:1 हमें बताता है ''पिता के पास हमारा एक सहायक है अर्थात धर्मी यीशु मसीह।'' यीशु ने बार-बार अपने चेलों को उसके नाम के द्वारा पिता के पास आना सिखाया (यूहन्ना 14:13, 14; 15:16; 16:23)। यह अजीब बात है कि बहुत से लोग जो खुद मसीही कहते हैं अपनी प्रार्थनाओं में से मसीह के नाम को निकाल देते हैं। हमें पिता के सामने अपनी स्तुति और याचनाएं उसके पुत्र, यीशु मसीह के नाम के द्वारा ही ले के जानी चाहिए।

खराई से उसके साथ बात करो। अय्यूब ने कहा कि यदि उसे परमेश्वर से अपनी बात कहने का मौका मिल जाता तो उसने ''उसके सामने अपना मुकद्दमा पेश [करते हुए] बहुत से प्रमाण'' देने थे (23:4)। अन्य शब्दों में अय्यूब ने अपने निर्दोष होने के सम्बन्ध में परमेश्वर के सामने खराई से और ठोस ढंग से अपनी बातें कहनी थीं। हम अपनी भावनाएं चाहे जो भी हों परमेश्वर के साथ खुलकर प्रकट कर सकते हैं। परन्तु ऐसा हमें अपने पवित्र परमेश्वर के लिए बड़े आदर के साथ करना आवश्यक है। परमेश्वर के बारे में अय्यूब की कुछ बातें गलत थीं, क्योंकि उसने अपनी गहरी पीड़ा में से अज्ञानता में यह सब कहा था। कहानी के अंत में उसने कहा, ''इसलिए मुझे अपने ऊपर घृणा आती है और मैं धूप और राख में पश्चात्ताप करता हूं'' (42:6)। इब्रानियों के लेखक ने लिखा, ''इस कारण हम इस राज्य को पाकर जो हिलने का नहीं कृतज्ञ हों, और भक्ति, और भय सहित, परमेश्वर की ऐसी आराधना करें जिससे वह प्रसन्न होता है। क्योंकि हमारा परमेश्वर भस्म करने वाली आग है'' (इब्रानियों 12:28, 29)।

परमेश्वर की सुनने को तैयार रहो। अय्यूब ने कहा, ''मैं जान लेता कि उसने मुझ से उत्तर में क्या कहा है, और जो कुछ वह मुझ से कहता वह मैं समझ लेता'' (23:5)। परमेश्वर से ज्ञान को पाने की अय्यूब की बड़ी इच्छा थी। विशेषकर वह अपने दु:ख का कारण समझना चाहता था जिसकी उसे समझ नहीं थी। कुछ लोग चाहते हैं कि उनके लिए प्रार्थना की जाए और परमेश्वर उनकी सुन ले, पर उसकी इच्छा कभी उसके वचन का अध्ययन करके उसकी सुनने की नहीं होती। इसके विपरीत हमें परमेश्वर के साथ संचार के दोनों माध्यमों को खुले रखना आवश्यक है।

विश्वास करो कि परमेश्वर को तुम्हारा ध्यान है। पूरी पुस्तक में अय्यूब को परमेश्वर के प्रति अपनी करुणा पर संदेह था। परन्तु इस वचन में अय्यूब ने माना कि परमेश्वर को उसका ध्यान था और उसने उसके साथ कठोरता से पेश नहीं आना था। उसने कहा, ''क्या [परमेश्वर] अपना बड़ा बल दिखाकर मुझ से मुक़द्दमा लड़ता? नहीं, वह मुझ पर ध्यान देता'' (23:6)। परमेश्वर को सचमुच में अपनी सृष्टि की चिंता है। अफ़सोस कि कुछ लोग गलती से यह मान लेते हैं कि वे परमेश्वर की पहुंच से दूर हो गए हैं और उसे उनका कोई ध्यान नहीं है। परमेश्वर को विशेषकर अपने लोगों का ध्यान है। मसीही लोगों के नाम पत्र में पतरस ने लिखा, ''इसलिये परमेश्वर के बलवन्त हाथ के नीचे दीनता से रहो, जिससे वह तुम्हें उचित समय पर बढ़ाए। और अपनी सारी चिन्ता उसी पर डाल दो, क्योंकि उसको तुम्हारा ध्यान है'' (1 पतरस 5:6, 7)। हम अपने प्राणों

को यहोवा के सामने उण्डेल सकते हैं, क्योंकि उसे हमारा ध्यान है।

भरोसा रखो कि परमेश्वर तुम्हारी सहायता कर सकता है। अय्यूब का मानना था कि परमेश्वर उसे उन सब आरोपों से मुक्त कर देगा जो उसके मित्रों ने उसके ऊपर लगाए थे (23:7)। यह भरोसा कर कि परमेश्वर हमारी सहायता कर सकता है। यह भरोसा करते हुए कि उसके पास हमारी सहायता करने और हमें क्षमा करने की सामर्थ है, हमें अपनी चिंताएं परमेश्वर के सामने लेकर आनी चाहिए। इब्रानियों के लेखक ने यह समझाने के बाद कि यीशु हमारा बड़ा प्रधान याजक है, जो हमारी निर्बलताओं में हमारे साथ सहानुभूति रखता है, निष्कर्ष निकाला कि ''इसलिए आओ, हम अनुग्रह के सिंहासन के निकट हियाव बान्धकर चलें, कि हम पर दया हो, और वह अनुग्रह पाएं, जो आवश्यकता के समय हमारी सहायता करे'' (इब्रानियों 4:16)। परमेश्वर चाहे सामर्थी और प्रतापी है फिर भी उसके सिंहासन को ''अनुग्रह का सिंहासन'' बताया गया है। हो सकता है कि परमेश्वर हमें हर समय हमारी इच्छा के अनुसार न दे पर वह हमें वह अवश्य देगा जिसकी हमें आवश्यकता है।

सारांश। यूहन्ना ने आश्वस्त करने वाले ये शब्द लिखे, ''और हमें उसके सामने जो हियाव होता है, वह यह है; कि यदि हम उसकी इच्छा के अनुसार कुछ मांगते हैं, तो वह हमारी सुनता है। जब हम जानते हैं, कि जो कुछ मांगते हैं वह हमारी सुनता है, तो यह भी जानते हैं, कि जो कुछ हमने उससे मांगा, वह पाया है'' (1 यूहन्ना 5:14, 15)।

प्रतिदिन की रोटी (23:12)

अय्यूब ने घोषणा की, ''मैं ने उसके वचन अपनी इच्छा से कहीं अधिक काम के जानकर सुरक्षित रखे'' (23:12)। ''काम के'' के बजाय (NASB में ''आवश्यक भोजन''), NIV में ''प्रतिदिन की रोटी'' है। हर कोई जानता है कि शारीरिक रूप में हमारे जीवित रहने के लिए प्रतिदिन की रोटी (भोजन) आवश्यक है। यीशु ने अपने चेलों को प्रार्थना करना सिखाते हुए यह कहा, ''हमारी दिन भर की रोटी आज हमें दे'' (मत्ती 6:11)। इसी प्रकार से हमारे लिए अपने आत्मिक रूप में जीवित रहने को सुनिश्चित करने के लिए परमेश्वर के वचन से खाते रहना आवश्यक है। डी. स्टिवर्ट

केवल रोटी ही से नहीं (23:12)

अय्यूब को वह बात समझ में आ गई थी, जो यीशु ने परखने वाले से कही थी, '''मनुष्य केवल रोटी ही से नहीं, परन्तु हर एकवचन से जो परमेश्वर के मुख से निकलता है, जीवित रहेगा''' (मत्ती 4:4)। मुझे नहीं पता कि हम में से कितने लोगों के अंदर भावना पाई जाती हैं। क्या हम *प्रतिदिन* परमेश्वर के वचन को पढ़ने और इस पर मनन करने के लिए समय बिताते हैं? हर मसीही को पता होना चाहिए कि व्यक्तिगत बाइबल अध्ययन कैसे किया जाए। वर्ष में एक बार पूरी बाइबल को पढ़ना बहुत अच्छी बात है। जैसे भजन संहिता 119 में भजन लिखने वाले ने कहा, उसी प्रकार हम भी परमेश्वर के वचन को ऊंचा उठा सकते हैं:

> क्या ही धन्य हैं वे जो चाल के खरे हैं, और यहोवा की व्यवस्था पर चलते हैं! क्या ही धन्य हैं वे जो उसकी चितौनियों को मानते हैं, और पूर्ण मन से उसके पास आते हैं!

(119:1, 2)।

जवान अपनी चाल को किस उपाय से शुद्ध रखे? तेरे वचन के अनुसार सावधान रहने से (119:9)।

हे यहोवा, मुझे अपनी विधियों का मार्ग दिखा दे; तब मैं उसे अन्त तक पकड़े रहूंगा। मुझे समझ दे, तब मैं तेरी व्यवस्था को पकड़े रहूंगा और पूर्ण मन से उस पर चलूंगा (119:33, 34)।

तेरा वचन मेरे पांव के लिये दीपक, और मेरे मार्ग के लिये उजियाला है (119:105)।

तेरी चितौनियां अनूप हैं, इस कारण मैं उन्हें अपने जी से पकड़े हुए हूं (119:129)।

डी. शैकलफोर्ड

टिप्पणियां

[1]सेमुएल कॉक्स, *ए कॉमैंट्री ऑन द बुक ऑफ़ अय्यूब,* 2रा संस्क. (लंदन: केगन पॉल, ट्रेंच ऐंड कंपनी, 1885), 308. [2](NASB के ''विद्रोह'' के बजाय - अनुवाद) कई संस्करणों में ''कड़वाहट'' है (KJV; NKJV; RSV; NRSV; NIV; NJPSV; CEV; NLT)। अय्यूब की ''कड़वी'' शिकायत के लिए थे। देखें 7:11; 10:1. [3]जॉन ई. हार्टले, *द बुक ऑफ़ अय्यूब,* द न्यू इंटरनेशनल कॉमैंट्री ऑन द ओल्ड टैस्टामैंट (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1988), 338, एन. 8. [4]रॉबर्ट एल. अल्डन, *अय्यूब,* द न्यू अमेरिकन कॉमैंट्री (पृष्ठ नहीं: ब्रॉडमैन ऐंड होल्मन पब्लिशर्स, 1993), 240. [5]लुडविग कोहलर ऐंड वाल्टर बामगार्टनर, *द हिब्रू ऐंड अरेमिक लेक्सिकन ऑफ़ द ओल्ड टैस्टामैंट,* स्टडी एडिशन, अनु. व सम्पा. एम. ई. जे. रिचर्डसन (बोस्टन: ब्रिल, 2001), 2:1224. [6]हार्टले, 338, एन. 9. [7]कोहलर ऐंड बामगार्टनर, 2:1986. [8]आल्डन, 241. [9]वहीं, 242. [10]एच. एच. रोअले, *अय्यूब,* द सेंचुरी बाइबल, न्यू सीरीज़ (ग्रीनवुड, साउथ कैरोलाइना: द अटिक प्रैस, Inc., 1970), 202.

[11]इब्रानी धर्मशास्त्र में फिर से ध्यान दिलाने के आधार कुछ संस्करणों में दिया गया है ''मैंने उसके मुंह के वचन को अपनी *गोद में* [या *हृदय*] में जमा कर लिया'' (देखें आल्डन, 242)। [12]होमेर हेली, *ए कॉमैंट्री ऑन अय्यूब* (पृष्ठ नहीं: रिलिजियस सप्लाई, Inc., 1994), 211. [13]कोहलर ऐंड बामगार्टनर, 2:1036.